Unit 1 : Paper - 2 Concurrent issues of education in India

Present Scenario of Indian Education

- ✓ Aims, objectives and Educational Structure of Foundation and Primary Education in India
- ✓ Aims, Objectives and Educational Structure of Secondary Edu in india
- Aims, objectives and Educational structure of Higher Edu^n in india
- Concurrent Issues related to Primary, Secondary and Higher Edu^n.

"प्राथमिक शिक्षा शैक्षिक अनुभवों को प्रयोग में लाना सिखाती है तथा ग्रामीण और नगरीय लोगों के मध्य मानसिक अवरोधों को समाप्त करती है।" — The Handbook for teachers of elementary edu^n

पूर्व प्राथमिक शिक्षा :- • पूर्व प्राथमिक शिक्षा को मनुष्य के विकास की नींव कहा जाता है।

- यह वह शिक्षा है जो 3-8 आयु वर्ग के बच्चों को दी जाती है।
- यह संयोजित शिक्षा का पहला स्तर है।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्री-स्कूल शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है।
- यह शिक्षा सरकारी, व निजी विद्यालयों द्वारा किसी भी एक व्यवस्था - आँगनवाड़ी, नर्सरी स्कूल, प्री स्कूल, प्रिपेरेटरी स्कूल, किंडरगार्टन व मांटेसरी स्कूल के माध्यम से दी जाती है।

REDMI NOTE 11 PRO+ 5G 13/04/2023 13:20

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और फाउंडेशनल स्टेज / पूर्व प्राथमिक शिक्षा
(NEP, 2020 and foundational Stage / Pre primary Edu°)

- NEP. 2020 भारत की ऐतिहासिक शिक्षा नीति है, जिसे भारत सरकार द्वारा सन् 2020 में घोषित किया गया था
- सन् 1986 में जारी हुयी शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है।
- यह नीति के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।
- NEP 2020 में सतत विकास के लिए 2030 तक लक्षित सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लक्ष्य पर ध्यान रखा गया है।
- NEP, 2020 के मुख्य रूप से चार भाग है

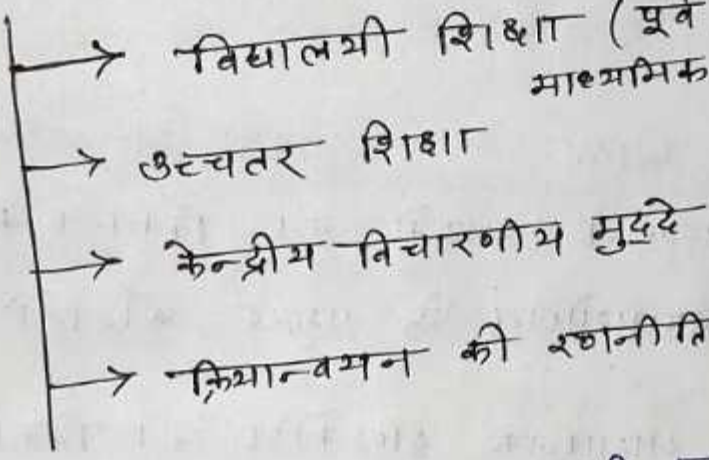

- NEP, 2020 में 2030 तक सभी स्कूलों के लिए Gross Enrollment Ratio (GER) 100% करना है।
- R.T.E (Right to education) की सीमा कक्षा 8 से बढ़ाकर 12वीं तक करना है।
- बहुभाषिकता और मातृभाषा के संवर्धन पर बल दिया गया है।
- विद्यालयों में छात्रावास तथा परिवहन की व्यवस्था

पर जोर दिया गया है।

- त्रिभाषा सूत्र में लचीलापन लाना
- क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षकों की नियुक्ति करना
- शिक्षा की पुरानी व्यवस्था 10+2+3 के स्थान पर 5+3+3+4 की व्यवस्था की गई है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के तीन मुख्य लक्ष्य (Aim) निम्नलिखित हैं –

1.) बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य व खुशहाली को बनाये रखना
2.) प्रभावशाली सम्प्रेषक बनाकर सीखने के प्रति उत्साहित करना
3.) बच्चों को आस-पास के परिवेश के साथ जोड़ना

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य (Objectives)

1.) बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास करना
2.) व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रमुख कौशलों का विकास करना
3.) बच्चों में सामाजिक दृष्टिकोण का विकास करना
4.) भावनात्मक/संवेगात्मक परिपक्वता लाना
5.) सौन्दर्यबोध की भावना को बढ़ावा देना
6.) जिज्ञासा जाग्रत करना
7.) आत्मअभिव्यक्ति के अवसर देना
8.) स्वतंत्रता तथा सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने प्राथमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों/कार्यों की सिफारिश की है :-

(1) बच्चों का सर्वांगीण विकास करना

(2.) उनमें मातृभाषा के माध्यम से साक्षरता, संख्यात्मकता और तकनीक का विकास करना

(3.) प्रत्येक बच्चे में देशभक्ति और लोकतांत्रिक भावना को विकसित करना

(4.) शिक्षा को निःशुल्क, अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाना

(5.) संस्कृति के साथ छात्रों की पहचान करवाना

(6.) व्यावसायिक दक्षता विकसित करना

(7.) छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सक्षम बनाना

(8.) उनमें स्वच्छता सम्बंधी आदतों का विकास करना

(9.) शिक्षार्थियों में सौन्दर्य बोध विकसित करना

(10.) सहकारी एवं सामुदायिकता की भावना का विकास करना

(11.) छात्रों को श्रम की गरिमा से अवगत करना

प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

1) प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा की नींव है।
2) मूल प्रवृत्तियों का विकास एवं संशोधन करती है।
3) व्यक्तित्व के निर्माण का आधार है।
4) प्राथमिक शिक्षा जन शिक्षा है।
5) व्यक्ति की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करती है।
6) प्राथमिक शिक्षा आगे की शिक्षा प्राप्त न करने वालों की पूर्ण शिक्षा है।

Educational structure of foundational stage
[Pre Primary (5-8 yrs) & Primary Education
(8-11 yrs) in NEP, 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के लागू होने पर

शिक्षा संरचना — 10+2+3

प्राथमिक शिक्षा — कक्षा 1 – 5 तक
उच्च प्राथमिक शिक्षा — कक्षा 6 – 8 तक
माध्यमिक शिक्षा — कक्षा 9 – 10 तक
उच्च माध्यमिक शिक्षा — 10 – 12 तक

* 6 – 14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है।

NEP, 2020 के लागू होने पर

शिक्षा संरचना – 5 + 3 + 3 + 4

(1) पाँच वर्ष की आधारभूत अवस्था (foundational stage) — 3 साल का Pre Primary school + Grade 1, 2
(2) तीन वर्ष की Preparatory stage — Grade 3, 4, 5
(3.) तीन वर्ष की middle stage — Grade 6, 7, 8
(4.) चार वर्ष की secondary stage — Grade 9, 10, 11, 12

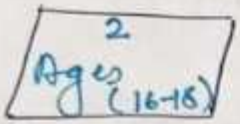

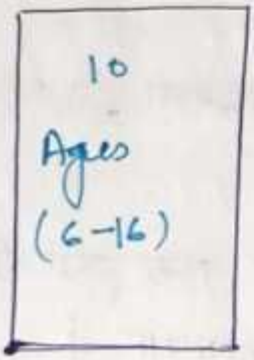

पिछला अकादमिक ढाँचा

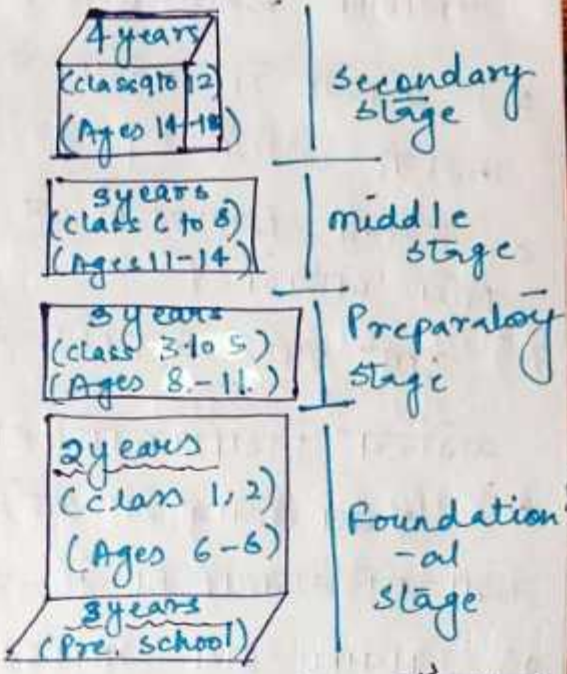

नया अकादमिक ढाँचा

Main Recommendations for Development of Foundation Based and Primary Education (फाउण्डेशन आधारित एवं प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए प्रमुख प्रावधान)

Page - 8

NEP. 2020 में फाउण्डेशन आधारित एवं प्राथमिक शिक्षा हेतु मुख्य प्रावधान किये गये हैं:—

1) प्रत्येक आंगनबाड़ी केन्द्र में अच्छी तरह से डिजाइन किया हुआ हवादार, बाल सुलभ भवन निर्मित होगा

2) शिक्षकों के रिक्त पदों को जल्द से जल्द भरा जायेगा।

3) NCERT, SCERT के द्वारा class 1st के बच्चों के लिए अल्पकालीन, प्ले आधारित स्कूल पर तैयार माड्यूल बनाया जायेगा।

5.) आँगनवाड़ी शिक्षक और वर्कर को विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

6.) स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य की नियमित जाँच कराई जाएगी।

6) इसकी निगरानी के लिए हेल्थ कार्ड भी जारी किये जायेंगे।

7.) ड्रॉप आउट बालकों की संख्या कम करना, देश की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी।

8.) 5 वर्ष की आयु से पहले हर एक बच्चा एक प्रारम्भिक कक्षा या बालवाटिका में स्थानांतरित हो जाएगा।

9.) M.HRD द्वारा फाउंडेशनल स्टेज पर आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया जायेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए आकलन प्रक्रिया -

1.) बच्चों का आकलन खेल व अन्य गतिविधियों के माध्यम से होगा।

2.) बच्चों की लिखित व मौखिक परीक्षा नहीं ली जायेगी।

3.) आकलन का उद्देश्य बच्चों को उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण का ठप्पा लगाना नहीं है।

4.) आकलन बच्चों की कमी के स्थान पर उसकी शक्तियों पर केन्द्रित होना चाहिए।

5.) शिक्षक बच्चों के आकलन के आधार पर गतिविधियों की योजना बनायें।

6) शिक्षक व अभिभावक दोनों बच्चों की प्रगति पर नजर रखेंगे।

7.) बच्चों के अभिभावकों को संसाधन के तौर पर जोड़ा जायेगा

8.) बच्चों की मदद के लिए अभिभावक शिक्षा को प्रमुखता दी जाएगी।

NEP, 2020 में प्राथमिक शिक्षा के सुधार हेतु सुझाव (Suggestions)

1.) MHRD का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने की सिफारिश

2.) कक्षा 12 वीं तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा देने की बात कही गयी है जो अभी तक कक्षा - 8 तक है।

3.) इस योजना में 3-18 वर्ष के बच्चों को शामिल करने के लिए RTE, 2009 को विस्तृत करने का सुझाव दिया गया है।

4.) कम से कम कक्षा - 5 तक मातृभाषा में पढ़ाई करने का सुझाव दिया गया है।

5) प्री-स्कूल और कक्षा 1 में बच्चों की तीन अन्य भारतीय भाषाओं से परिचित करने का सुझाव दिया गया है।

6) कक्षा - 3 के बाद बच्चों को दो अन्य भारतीय भाषाओं को लिखना सिखाया जाना चाहिए।

7.) स्तरहीन शिक्षण संस्थानों को बंद करने के साथ कई नए सुधार प्रस्तावित हुए हैं।

8.) 4 वर्षीय बी॰एड कार्यक्रम शुरू करने की सलाह दी गयी है।

माध्यमिक शिक्षा का अर्थ

कार्टर वी गुड के अनुसार, "माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है, जो सामान्यत: 14 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों के लिए होता है।"

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की कड़ी है।

इसके अन्तर्गत 14-18 वर्ष के आयु वर्ग के विद्यार्थी कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं।

कक्षा 9 एवं 10 को उच्च माध्यमिक तथा 11 और 12 को उच्चतर माध्यमिक स्तर कहा जाता है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा वास्तव में शिक्षा के क्षेत्र में रीढ़ का कार्य करती है।

S.N. Mukharjee ने अपनी पुस्तक Secondary Edu. in India में माध्यमिक शिक्षा को तीन रूपों में परिभाषित किया है - स्थिति के रूप में, प्रकार के रूप में, स्तर के रूप में

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य

सन 1952 में डॉ॰ लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में गठित 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' ने माध्यमिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य दिए हैं:-

(1.) लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास
(2.) व्यावसायिक कुशलता
(3.) व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना
(4.) नेतृत्व का प्रशिक्षण देना

(5.) चरित्र का निर्माण करना
(6.) व्यावसायिक प्रवृत्ति का विकास

NEP 2020 के अनुसार माध्यमिक स्तर की शिक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अनुशंसाएँ

- 5+3+3+4 के नये प्रारूप में स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षण शास्त्र को पुनर्गठित करना
- विद्यार्थियों का समग्र विकास
- Compulsory learning और critical thinking को बढ़ाने के लिए course content को कम करना
- प्रायोगिक अधिगम
- कोर्स चुनाव में लचीलेपन के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाना
- बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति
- Compulsory subjects, skills and abilities का Pedagogical Integrated Integration
- स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या
- विद्यार्थियों के विकास के लिए आंकलन में आमूल चूल परिवर्तन
- विशेष प्रतिभा वाले मेधावी विद्यार्थियों के लिए सहायता
- समतामूलक और समावेशी शिक्षा : सभी के लिए
- स्कूली शिक्षा के लिए मानक निर्धारण और प्रमाणन

NEP 2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा का बदला हुआ स्वरूप

1.) 10+2+3 ढाँचे की जगह 5+3+3+4 का नया पाठ्यक्रम संरचना

2.) बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में अब लाइफ स्किल को जगह दी जाएगी।

3.) मातृभाषा पर जोर

4.) पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए भाषा और गणित पर जोर

5.) चौथी और पाँचवी कक्षा के बच्चों के लिए लेखन और कौशल पर ध्यान देने की बात की गयी है।

6.) बच्चों के बस्तों के बोझ को कम करने की बात की गयी है।

7.) शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम NCERT द्वारा तैयार होगा

8.) छठी क्लास से व्यावसायिक कोर्स शुरू किए जाएंगे

9.) कला, संगीत, पुस्तक कला, खेल अब मुख्य पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

10.) कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का विस्तार 12वीं तक करने का सुझाव है।

11.) एक प्रगति कार्ड समग्र 360 डिग्री बहुआयामी कार्ड होगा।

माध्यमिक शिक्षा के कार्य

- वैयक्तिक स्तर पर
- सामाजिक स्तर पर
- राष्ट्रीय स्तर पर

1. जीवन के लिए तैयार
2. वातावरण से अनुकूलन
3. व्यावसायिक कुशलता
4. भाषा की कुशलता का विकास
5. नैतिक मूल्यों का विकास
6. सृजन की क्षमता का विकास

1. समाजीकरण
2. सामाजिक परिवर्तन
3. सामाजिक कुशलता
4. संस्कृति की सुरक्षा और संरक्षण

1. आदर्श नागरिकों का निर्माण
2. राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास
3. राजनीतिक चेतना का विकास
4. नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण

माध्यमिक शिक्षा का महत्व

1) स्वयं में पूर्ण इकाई है।
2) उच्च शिक्षा का आधार है।
3) प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारण करती है।
4) प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार के लिए अति आवश्यक है।
5) रोजगार का प्रवेश द्वार है।
6) आदर्श नागरिकों के निर्माण में सहायक
7) राष्ट्र की जनशक्ति के विकास का आधार
8) किशोरों का मार्गदर्शन करने में सहायक
9) सामाजिक गुणों एवं मूल्यों के विकास में सहायक
10) सफल जीवनयापन करने की क्षमता का विकास करती है।

उच्च शिक्षा का अर्थ

उच्च शिक्षा का अर्थ है - शैक्षिक संरचना के विभिन्न स्तरों में सबसे ऊँचे स्तर की शिक्षा। इसे विश्वविद्यालयी शिक्षा भी कहा जाता है।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने परिभाषित करते हुए लिखा है कि, " विश्वविद्यालयी वह स्थान है जहाँ पर सब अपने अपने योगदान द्वारा सत्य की खोज करते हैं और अपनी शैक्षिक उन्नति द्वारा व्यक्तित्व का विकास करते हैं।"

उच्च शिक्षा के उद्देश्य

न्यूमैन के अनुसार, " यदि उच्च शिक्षा का कोई व्यावहारिक उद्देश्य है तो मैं कह सकता हूँ कि वह समाज के लिए उत्तम नागरिकों को प्रशिक्षित करना है।"

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (राधाकृष्णन कमीशन) ; 1948,49 के अनुसार —

(1.) शारीरिक विकास
(2.) बौद्धिक विकास
(3.) नैतिक और आध्यात्मिक विकास
(4.) नेतृत्व ग्रहण करने की योग्यता का विकास
(5.) कुशल नागरिकता का विकास
(6.) संस्कृति का संरक्षण और विकास
(7.) जीवन और ज्ञान के समन्वय की क्षमता का विकास
(8.) विश्वबंधुत्व और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास

भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन) 1964-66 के अनुसार उद्देश्य —

1) नवीन ज्ञान की खोज और विकास करना
2) राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए कार्य करना
3) समानता को प्रोत्साहित करना
4) सत्य की खोज के लिए पूर्ण साहस एवं निर्भयता -पूर्वक कार्य करना
5) प्राचीन ज्ञान का विश्लेषण करना
6) सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना
7) जीवन के सभी क्षेत्रों में सही नेतृत्व प्रदान करना
8) विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं समाज में अच्छे जीवन के लिए आवश्यक मान्यताओं, गुणों एवं मूल्यों का विकास करना।

भारत में उच्च शिक्षा की शैक्षिक संरचना

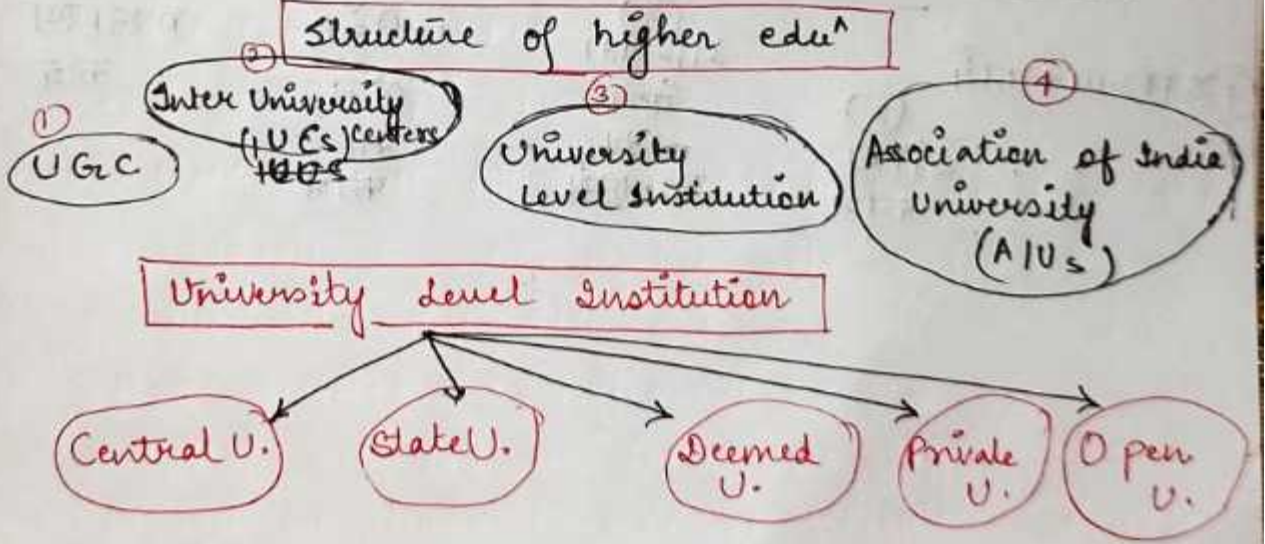

उच्च शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

1.) सामाजिक समरसता की स्थापना करने हेतु
2.) नेतृत्व शक्ति का विकास करने हेतु
3.) बुद्धिजीवियों के निर्माण हेतु
4.) उच्च ज्ञान की प्राप्ति एवं नये ज्ञान की खोज करने हेतु
5.) सत्य की पहचान करने हेतु
6.) व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु
7.) विशेषज्ञों का निर्माण करने हेतु
8.) राष्ट्र का आर्थिक एवं औद्योगिक विकास करने हेतु
9.) उच्च स्तर के मानव संसाधनों का निर्माण करने हेतु

विश्वविद्यालय के कार्य

1. अध्यापन कार्य
2. शोध कार्य
3. मान्यता देने का कार्य
4. परीक्षा लेने का कार्य
5. प्रसारण कार्य